International Journal of Academic Research
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026

पर्यावरणीय चिंताएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ

डॉ. सुबन बोडनायक
हिंदी व्याख्याता, हिंदी विभाग, शासकीय महिला डिग्री कॉलेज अराकू वैली, अल्लूरी सीताराम राजू, आंध्र प्रदेश।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में पर्यावरण का प्रश्न संपूर्ण विश्व के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा आधुनिक तकनीकी विकास ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किंतु इसके साथ-साथ पर्यावरण पर भी गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आज वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। पर्यावरण केवल प्राकृतिक तत्वों का समूह नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन, संस्कृति और समाज से गहराई से जुड़ा हुआ है। यदि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है तो इसका प्रभाव सीधे मानव जीवन पर पड़ता है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है।[1]

पर्यावरण की अवधारणा

'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से मिलकर बना है। इसका अर्थ है वह समस्त प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश जो हमें चारों ओर से घेरे रहता है। इसमें वायु, जल, भूमि, वनस्पति, जीव-जंतु और मानव समाज सभी सम्मिलित होते हैं।
पर्यावरण का संतुलन पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब मानव प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीता है, तब पर्यावरण स्वस्थ और सुरक्षित रहता है। लेकिन जब मानव अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करता है, तब पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न होता है।[2]

पर्यावरणीय समस्याएँ

1. वायु प्रदूषण

आज वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुका है। औद्योगिक कारखानों, वाहनों और ऊर्जा उत्पादन के साधनों से निकलने वाली जहरीली गैसें वायु को प्रदूषित कर रही हैं। इससे मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है और अनेक श्वसन रोग उत्पन्न होते हैं।[3]

2. जल प्रदूषण

जल जीवन का आधार है, लेकिन आज जल स्रोत तेजी से प्रदूषित होते जा रहे हैं। औद्योगिक कचरा, रासायनिक पदार्थ और प्लास्टिक के कारण नदियाँ और झीलें प्रदूषित हो रही हैं। इससे जलचर जीवों का जीवन भी संकट में पड़ रहा है।

3. भूमि प्रदूषण

रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और औद्योगिक कचरे के कारण भूमि की गुणवत्ता लगातार घटती जा रही है। इससे कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है और मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है।

4. वनों की कटाई

मानव विकास के नाम पर वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। इसके कारण जैव विविधता में कमी आ रही है तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या भी बढ़ रही है।[4]

5. जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिससे मौसम के चक्र में परिवर्तन हो रहा है। हिमनद पिघल रहे हैं और समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं। सबसे बड़ी चुनौती विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना है। आधुनिक विकास की दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है।
इसके अलावा लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की कमी भी एक बड़ी समस्या है। जब तक समाज के सभी वर्ग पर्यावरण संरक्षण के महत्व को नहीं समझेंगे, तब तक इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं होगा।[5]

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।

प्लास्टिक के उपयोग को कम करना।

सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना।

पर्यावरण शिक्षा को विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर प्रोत्साहित करना।

पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कानूनों का कठोरता से पालन करना।

उपसंहार

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यदि हम प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और सामूहिक प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करें। तभी हम पृथ्वी को सुरक्षित और समृद्ध बना सकते हैं।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes)

रामधारी सिंह 'दिनकर', संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 112.

हजारीप्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 58.

अनिल अग्रवाल, भारत का पर्यावरणीय परिदृश्य, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट, नई दिल्ली, पृ. 74.

माधव गाडगिल एवं रामचंद्र गुहा, पर्यावरण और विकास, पेंगुइन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 95.

रामचंद्र गुहा, पर्यावरणवाद का वैश्विक इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 121.